Topic 3 उपसर्जन संज्ञा

प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्।
समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं स्यात्।

प्रथमेति - समास विधान करने वाले सूत्रों में प्रथमा विभक्ति से जिस पद का निर्देश किया जाता है उसे 'उपसर्जन' कहते हैं। उदाहरण के लिए समास विधायक सूत्र अव्ययं विभक्ति -० में 'अव्ययम्' पद प्रथमान्त है, अतः वह प्रकृत सूत्र से 'उपसर्जन' संज्ञक होगा। 'हरि ङि० अधि' में अधि यही अव्यय है, अतः यह ही 'उपसर्जन' है।

उपसर्जनं पूर्वम्

समासे उपसर्जनं प्राक् प्रयोज्यम्।
इत्यर्थः प्राक् प्रयोगः। सुपो लुक्, एक देशविकृतस्यानन्यत्वात् प्रातिपदिक संज्ञायां स्वादयुत्पत्तिः, 'अव्ययीभावश्च' इत्यव्ययत्वात् सुपो लुक् - अधिहरि।

समास में 'उपसर्जन' का प्रयोग पहिले होता है। उदाहरण के लिए 'हरि ङि० अधि' में 'अधि' उपसर्जन है। अतः प्रकृत सूत्र से

उसका प्रयोग पहले होने पर 'अधि-हरि' इ.' रूप बनता है। यहाँ प्रातिपदिक होने पर सुप्-लोप हो 'अधि हरि' रूप बनने पर अव्ययीभाव होने के कारण प्राप्त 'सु' का लोप होकर 'अधिहरि' रूप सिद्ध होता है।

अव्ययीभावश्च।
अयं नपुंसकं स्यात्। गाः पात्रीति गोपस्तस्मिन्निति — अधिगोपम्।

अव्ययीभाव समास नपुंसक-लिङ्ग होता है। उदाहरण के लिए 'गोपा' इ. अधि' में — अव्यय विभक्ति — ० से पूर्ववत् समास आदि होकर 'अधिगोपा' रूप बनता है। इस स्थिति में अव्ययीभाव होने के कारण प्रकृत सूत्र से नपुंसकलिङ्ग हुआ। तब ह्रस्वो नपुंसके — ० से ह्रस्व होकर 'अधिगोप' रूप बना। यहाँ प्रथमा के एकवचन में 'सु' होकर 'अधिगोप सु' रूप बनने पर अव्ययादाप् सुपः से 'सु' का लोप प्राप्त होता है।

topics-3

एकविभक्ति चाऽपूर्वनिपाते ।

विग्रहे यान्नियतविभक्तिकं तदुपसर्जनसंज्ञं स्यान्न तस्य पूर्वनिपातः ।

यदि 'उपसर्जन' पूर्व से पूर्व में प्रयोग न हो तो विग्रह में एक विभक्ति वाला पद (जिसकी विभक्ति एक ही रहती है, परिवर्तित नहीं होती) 'उपसर्जन' कहलाता है।

उपसर्जन के लिए दो बातें आवश्यक हैं —

(1) विग्रह में पद की विभक्ति न बदलनी चाहिए।

(2) उस पद का प्रयोग पूर्व में न होना चाहिए।

गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ।

उपसर्जने यो गो शब्दः, स्त्रीप्रत्ययान्तश्च तदन्तस्य प्रातिपदिकस्य ह्रस्वः स्यात् । अतिमालः ।

जिस प्रातिपदिक के अन्त में उपसर्जन-संज्ञक गो या स्त्री-प्रत्ययान्त शब्द हो, उसका ह्रस्व होता है।